ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 41 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 अगस्त, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 भा. कृ.-07

आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता द्वारा आयोजित श्रावणी उत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की रही धूम

श्री दीनदयाल गुप्ता ने स्वामी जी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना के साथ किया भव्य स्वागत

आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता के तत्वावधान में गत् 11 से 15 अगस्त, 2019 तक श्रावणी उत्सव का आयोजन किया गया जिसका समापन 15 अगस्त, 2019 को स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षा बन्धन के दिन भव्यता कि साथ किया गया। उत्सव में देश–विदेश में लोकप्रिय ओजस्वी वक्ता एवं आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों की धूम रही। वहीं प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री घनश्याम प्रेमी के मनोहारी भजनों से श्रोताओं ने अत्यन्त आनन्द प्राप्त किया।

उत्सव में प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक प्रतिदिन यज्ञ का कार्यक्रम चला जिसके ब्रह्मा पद को आर्य समाज के धर्माचार्य श्री राहुल देव शास्त्री ने सुशोभित किया। उसके पश्चात् 8.45 बजे से 9.45 बजे तक श्री घनश्याम प्रेमी जी के भजनों का तथा 9.15 से 10 बजे तक स्वामी आर्यवेश जी का व्याख्यान चलता रहा। व्याख्यान की श्रृंखला में आचार्य राहुल देव एवं युवा विद्वान् श्री योगेश शास्त्री जी के भी बीच–बीच में व्याख्यान होते रहे। प्रतिदिन सायंकाल के कार्यक्रम में 6.30 बजे से 7 बजे तक संन्ध्या, 7 से 8 बजे तक भजन तथा 8 से 9 बजे तक व्याख्यानों का कार्यक्रम चलता रहा। इस दौरान आर्य समाज कोलकाता और आर्य समाज हाबड़ा तथा अन्य स्थानों से भी प्रमुख लोग कार्यक्रम में सम्मिलित होते रहे।

स्वामी आर्यवेश जी के दुर्घटनाग्रस्त होने के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी का यह पहला कार्यक्रम था जिसमें वे सम्मिलित हुए। उनसे मिलने के लिए आर्य समाज के पदाधिकारी एवं विद्वान् जन आते रहे।

15 अगस्त, 2019 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रातः 9.30 बजे राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, श्री दीनदयाल गुप्ता तथा स्थानीय पार्षद् ने सम्मिलित रूप से ध्वजारोहण कर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित भी किया। उससे पूर्व यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा यजमानों को आशीर्वाद भी दिया गया। उसके पश्चात् आर्य समाज के सत्संग भवन में कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें आचार्य राहुल देव शास्त्री, श्री खुशहाल चन्द आर्य, श्री चांद रत्न दम्मानी, श्री रमेश आर्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री घनश्याम प्रेमी के राष्ट्र भक्ति से ओत–प्रोत गीत तथा स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी उद्बोधन से कार्यक्रम अत्यन्त उत्साहजनक हो गया।

इस अवसर पर दो योग शिक्षिकाओं का सम्मान भी किया गया तथा ज्ञानवर्द्धक वैदिक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी अत्यन्त आकर्षक रहा। कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व आर्य समाज के उपमंत्री श्री जोगेन्द्र गुप्ता ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया। इस पूरे पांच दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए जन सामान्य का आह्वान किया कि यदि जीवन में सुख और शांति चाहते हो तो आर्य समाज के साथ मिलकर कार्य करो।

स्वामी आर्यवेश जी ने अपने व्याख्यानों में प्रमुख वैदिक मान्यताओं विशेषतया त्रैतवाद, सृष्टि उत्पत्ति, कर्मफल व पुनर्जन्म व्यवस्था, वर्णाश्रम व्यवस्था, पंच महायज्ञ, अष्टांग योग, सोलह संस्कार, आर्ष गुरुकुल शिक्षा पद्धति आदि के सम्बन्ध में सरल शैली में अत्यन्त प्रभावी ढंग से प्रकाश डाला। उन्होंने धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास पर प्रहार करते हुए फलित ज्योतिष, जादू–टोना, तन्त्र–मन्त्र, भूत–प्रेत, मृतक श्राद्ध, अवतारवाद, राशिफल आदि विविध अवैदिक क्रिया–कलापों का जोरदार खण्डन किया और लोगों को समझाया कि इन भ्रान्त रूढ़ियों एवं क्रिया–कलापों में व्यर्थ जीवन खपाने के बदले निराकार ईश्वर की उपासना एवं जीवन को उन्नति की तरफ ले जाने वाली उपयोगी वैदिक मान्यताओं का आचरण करें तथा अपने जीवन में अपनायें। यज्ञ के वास्तविक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि जब तक हम

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आध्यात्मिक जीवन ही मानवता का लक्ष्य

लेखक– स्वामी श्रीकृष्णयोवाश्रमजी महाराज

प्रभु की सृष्टि में मानव का स्तर सबसे उच्च माना गया है। क्योंकि मनुष्य अपने बुद्धियोग से अक्षुण्ण सुख की प्राप्ति कर सकता है, इसकी सुख–प्राप्ति के निमित्त ही सम्पूर्ण जगत् है। वेद, शास्त्र, इतिहास आदि भी मानव लक्ष्य का अनेक प्रकार से प्रतिपादन करते हुए उत्सर्ग एवं अपवादरूप वाक्यों द्वारा निरतिशय सुख की ओर इसे ले जाते हैं। अतएव यदि मानव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं होता तो वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

पाणिनीय व्याकरण में 'तस्यापत्यम्' इस सूत्र से मनु महर्षि के अपत्य को 'मानव' कहा गया है 'मनोरपत्य पुमान् मानवः'। इसके साथ ही 'मनोर्जातावञ्यतौषुक् च' इस सूत्र के अनुसार मनु शब्द से जाति–अर्थ में अञ् और यत् प्रत्यय के साथ षुक् का आगम करके शब्द जातिवाचक 'मानुष' सिद्ध किया गया है। 'मानव का भाव अथवा कर्म' इस अर्थ में 'तल्' प्रत्यय जोड़कर 'मानवता' की निष्पत्ति हुई है। अर्थात् मनु महर्षि के विधान के अनुसार अपनी शारीरिक, मानसिक और वाचिक हलचलों को तथा प्राणि–पाद द्वारा होने वाले कर्मों को नियन्त्रित करने वाले का नाम 'मानव' है। इसीलिये मानवता के विरुद्ध भाव रखने वाला 'माणव' कहा गया है। अर्थात् वह मानव कहलाने का अधिकारी नहीं।

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोर्रोत्सर्गिकः स्मृतः।
नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्ध्यति माणवः।।

अर्थात् 'मनु' शब्द से औत्सर्गिक 'अण' और नकार को 'णत्व' होकर कुत्सिक अपत्य और मूढ अर्थ में 'माणव' शब्द का प्रयोग होता है। इससे यह स्पष्ट है कि मानव शब्द का प्रयोग शास्त्रीय मार्ग से व्यवहार करने वाले व्यक्ति के लिये ही है और शास्त्रीय क्रियायें ही मानवता कही जायेंगी।

इसी प्रकार आध्यात्मिक शब्द भी
आत्मनि इत्यध्यात्मम्, अध्यात्मभवमाध्यात्मिकम्।

अर्थात् आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला जीवन– आध्यात्मिक दुःख की निवृत्तिपूर्वक आध्यात्मिक सुख प्राप्ति ही मानवता का लक्ष्य होना चाहिये।

आध्यात्मिक उपेक्षा :– आज का मानव बौद्धिक तत्वों को प्रधानता देता हुआ बुद्धि बल पर जीवित रह उसी के द्वारा सर्वेष्ट साधन का अभिमान करता है। उसका कहना है कि बुद्धि द्वारा बुद्धिमानों ने देश काल और पात्रों की परिस्थिति के अनुसार स्मृति आदि का निर्माण किया और इनके द्वारा कुछ वर्गों का संचालन और संचालित वर्गों के हानि लाभ का प्रदर्शन दृष्टान्त और आख्यानों द्वारा किया, जिसे प्रमुखतः 'ब्राह्मण सभ्यता' के नाम से कहा जा सकता है। बुद्धि का विकास जैसे–जैसे होता है, मानव वैसे–वैसे ही अपने सुख–साधनों का अन्वेषण और उनका उपभोग करके कृतकृत्यता का अनुभव करता है। बौद्धवाद ही भौतिकवाद की जड़ है। मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बुद्धि को ऐसे क्षेत्रों में दौरा करना पड़ता है कि वह अपनी आवश्यकता का परिहार सोच लेता है और उससे नितान्त संतोष एवं आनन्द का अनुभव करता है। जैसे–जैसे जड़वाद की उन्नति होती जाती है, वैसे–वैसे आध्यात्मिकता से बहिर्मुखता भी होती चली जाती है; क्योंकि मनुष्य बाह्य वस्तुओं को ही सुख साधन मान लेता है। उसके ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय और मन बाहर की ओर ही दौड़ लगाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वह नयी–नयी आवश्यकताओं के अन्वेषण में इतना विकल और व्यस्त हो जाता है कि उसके अतिरिक्त अन्य भी कोई वस्तु है, इसका उसे अनुभव ही नहीं हो पाता। अन्त में वह जड़वादी स्वार्जित और स्वनिर्मित पदार्थों के उपभोग की क्षमता से क्षीण होकर व्यथित और किंकर्तव्य–विमूढ हो जाता है तथा अपनी आत्मबहिर्मुखता पर पश्चाताप करता है।

आध्यात्मिक दुःख :– संसार में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीन दुःख प्रसिद्ध हैं। आधिभौतिक दुःख मानुष–पशु–मृग–पक्षि, सरीसृप–स्थावर आदि के द्वारा प्राप्त होता है। इनकी निवृत्ति बाह्य उपायों से होती है। आधिदैविक दुःख प्राकृतिक आपदा हैं। आध्यात्मिक दुःख दो प्रकार का है– शारीरिक और मानसिक। शारीरिक दुःख वात–पित्त और श्लेष्मा की विषमता से अनेक प्रकार के होते हैं तथा मानसिक दुःख काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्यादि, विशेष, विषय–निबन्ध अतएव विविध होते हैं। ये दुःख आन्तरोपाप साध्य हैं।

धीधैर्यमात्मविज्ञानं मनोदोषौषधं परम्।

इस आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि, धैर्य एवं आत्मविज्ञान मन के दोषों को शान्त करने की परम औषध हैं।

आध्यात्मिक दुःख की शाखा :– शारीरिक दुःख वात, पित्त और कफ की विषमता के कारण अनेक प्रकार से शरीर को अभिव्याप्त करते हैं। वातज दोष शरीर को स्तब्ध कर संचालन क्रिया का अवरोध करके उसे पघु और चेष्टाहीन बना देते हैं। इसी प्रकार पित्त–प्रकोपजन्य रोग भी रक्तचाप, व्रण–विस्फोटादि अनेक प्रकार के होते हैं। कफ रोग कास–श्वासादि द्वारा मानव देह का सदैव विघटन करते और उसे दुर्बल बनाते रहते हैं। मानसिक दुःखों के विषय में तो कहना ही क्या है, एक–एक मानसिक दोष साक्षात् नरक का द्वार बन बैठता है। काम को ही लीजिए–यद्यपि

'धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ'

इत्यादि वाक्यों के अनुसार धर्म से अविरुद्ध काम भगवान का स्वरूप है, तथापि मन का कुछ और ही संकल्प रहता है और वह इस भावना को 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' तक पहुँचा देता है। इसी प्रकार

क्रोधान्धस्य विवेक शून्यमनसः किं किं न क्रियते कटु।
लोभः प्रसूतिः पापस्य लोभः पापस्य कारणम्।।

इत्यादि अनेक प्रमाणों से मानसिक दुःख अनेक अनर्थों का मूल है। मानसिक दुःखों की निवृत्ति के लिए

प्रयत्न करना ही मानवता का मुख्य लक्ष्य है।

मानव की महत्ता :– आस्तिक और नास्तिक सभी इस बात को मानते हैं कि मानव शरीर सर्वोत्कृष्ट है। यह जंक्शन स्टेशन है।

भगवान् ने जड़सृष्टि वृक्षादि तथा चेतन–सृष्टि पशु, मृग आदि को रचकर पुनः मनुष्य को बनाकर अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना को प्रस्तुत किया। कारण यह कि परब्रह्म परमात्मा के साक्षात्कार अथवा यों कहिए कि आत्मदर्शन की क्षमता मनुष्य में ही है। अतएव महर्षि पराशर ने मानव–प्रशंसा करते हुए कहा है–

चित्तप्रसादबलरूपतपांसि मेधा
मायुष्यशौचसुभगत्वमरोगता च।
ओजस्वितां त्विषमदात् पुरुषस्य चीर्णं
स्नानं यशोविभवसौख्यमलोलुपत्वम्।।

'चित्तप्रसाद, बल, रूप, तप, बुद्धि, आयुष्य, शौच, सौन्दर्य, स्वास्थ्य, ओज, कान्ति, स्नान, यश, वैभव, सुख और अलोभ मानव के लिये स्वयं भगवान की देन हैं।' मानव की विशेषता के एक–एक अंश से अन्य वस्तु विशिष्ट मानी गयी है। जहाँ सभी विशेषताओं का सामानाधिकरण्य है, वह मानव भगवान् की कितनी बहुमूल्य निधि है।

मानव का लक्ष्य

ब्रह्म के अवलोकन की क्षमता मानव में है, यह कहा गया है। परब्रह्म के साक्षात्कार का अर्थ है–स्वात्मदर्शन। इस आत्मदर्शन के साधन अनेक शास्त्रकारों ने बताये हैं। उनमें व्याप्य–व्यापक रूप से अनेक साधनों तथा उपायों का वर्णन है। वर्णधर्म एवं आश्रमधर्म इसकी प्रधान भित्तियाँ हैं। जहाँ वर्णधर्म और आश्रमधर्म नहीं हैं, वहाँ आत्मसाक्षात्काररूप मानव लक्ष्य की पूर्ति की सम्भावना ही नहीं की जा सकती है।

जिन–जिन वस्तुओं के सेवन का निषेध शास्त्रकारों ने लिखा है, उसको उसी प्रकार मानना तथा आचरण करना कल्याण का हेतु और लक्ष्य का साधक है। इसके साथ–साथ जो सार्वभौम धर्म हैं, उनका भी आचरण करना अनिवार्य है। 'सार्वभौम धर्म'–

सत्यमस्तेयमक्रोधो हीः शौचं धीर्धृतिर्दमः।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्वं उदाहृतः।।

'सत्य, चोरी न करना, अक्रोध, लज्जा, पवित्रता, बुद्धि, मनःसंयम, इन्द्रिय संयम, विद्या आदि सार्वभौम धर्म हैं।' इन धर्मों के पालन किये बिना मानव लक्ष्यसिद्धि पर नहीं पहुँच सकता। जिन देशों में तथा जिन वर्गों में वर्णाश्रम–व्यवस्था नहीं है, वहाँ आध्यात्मिक सुख स्वप्न में भी प्राप्त नहीं हो सकता, यह ध्रुव सत्य है।

कुछ लोग समय के साथ–साथ मानव व्यवस्थापक धर्म शास्त्रों के परिवर्तन की बात कहते हैं, यह उचित प्रतीत नहीं होता; क्योंकि शास्त्रों का सिद्धान्त सार्वभौम और अपरिवर्तनीय है, यह बात अनेक बार सिद्धान्त–सिद्ध हो चुकी है। मनुष्य अपनी दुर्बलता का आच्छादन इस प्रकार से करने की चेष्टा करता है, जो सर्वथा व्यवहार योग्य है। अतएव धर्मपूर्वक व्यवहार करने से गृहस्थ भी मुक्त होने का अधिकारी बन जाता है–

न्यायागतधनस्तत्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।
श्राद्धंकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते।।

अर्थात् न्यायपूर्वक धनार्जन करने वाला, तत्व–ज्ञान में निष्ठा रखनेवाला, सत्यभाषी, अतिथिसेवी और जीवित–पितरों की श्रद्धापूर्वक सेवा करनेवाला गृहस्थ भी मुक्त हो जाता है। यही आध्यात्मिक जीवन है और इसी की प्राप्ति के लिए यत्न करने में 'मानवता' की सार्थकता है।

छीना–झपटी :– आज भौतिकवाद से आक्रान्त मनुष्य का दृष्टिकोण धर्म और ईश्वर से हटकर अनाधिकार चेष्टाओं में अनवरत रत देखा जा रहा है। वर्ण और आश्रम की मर्यादाओं को तोड़ने के लिये आन्दोलन चल रहे हैं। जब मानव अपने देश, अपनी जाति, अपने धर्मग्रन्थों पर अविश्वास करके अन्य देश, जाति और धर्म की बात करता है, तब इसका सीधा अर्थ है कि वह कहीं भी सफल नहीं हो सकता। इसीलिये गीता में भगवान् ने कहा है–

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।

अपना धर्म ही सब कुछ है। उसमें किसी प्रकार का कष्ट भोगते हुए भी परधर्म की अपेक्षा सौष्ठव है। इसीलिये भारतीय इतिहास के समुज्ज्वल रत्न अपनी मर्यादाओं की रक्षा के लिये बलि वेदी पर चढ़े, उन्होंने प्राण तक दिये और अपना सब कुछ खोकर भी मर्यादाओं की रक्षा की। प्रवाह में बहना मुर्दों का काम है। साहसी और जिन्दा दिल प्रवाह के प्रबल पात से अपने को सुरक्षित करते हुए मानवता का संरक्षण करते हैं तथा सदैव अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते रहते हैं।

उपसंहार :– मानव–जीवन की सार्थकता और कृत्यकृत्यता आध्यात्मिक सुख–शान्ति में है। उसके लिये सदैव जागरूक रहना चाहिये। चित्त का संशोधन अनेक उपायों से करना चाहिये। परदोष, परनिन्दा, परस्वापहरण की भावनाएँ जो आज मानव को दानव बना रही हैं, इनसे बचना चाहिये। असत्यभाषण का अवरोध, सत्य भाषण की चेष्टा सदैव करनी चाहिए; तभी मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है और मानव शरीर की सफलता प्राप्त कर सकता है। अन्यथा–

तस्यामृतं क्षरति हस्तगतं प्रमादात्।

के अनुसार मानव अमृत के आये हुए घट को अपने हाथ से गिराकर प्रमाद का परिचय देगा। अतः आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिये।

नारी! तुम मार्गदर्शिका हो

– अर्चना प्रिय आर्या

यह अकाट्य सत्य है कि नर और नारी दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। समाजरूपी और राष्ट्ररूपी रथ के दो चक्र हैं। जैसे एक चक्र से रथ नहीं चलता। ऐसे ही अकेले पुरुष या अकेली नारी से समाज और राष्ट्र आगे नहीं बढ़ सकता। नर और नारी कहीं भाई और बहन के रूप में, कहीं पुत्र और माता के रूप में, कहीं पति और पत्नी के रूप में, कहीं ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी के रूप में, कहीं आचार्य और आचार्या के रूप में, कहीं प्रचारक और प्रचारिका के रूप में, कहीं लेखक व लेखिका के रूप में समाज में अपने–अपने कार्यकलापों को करती दृष्टिगोचर होती हैं। फिर भी जीवन निर्माण में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वह माता, पत्नी, पुत्री, बहन आदि रूपों में पुरुष को सम्बल प्रदान करती है। जीवन निर्माण का कार्य जितनी सरलता से वह कर सकती है कोई दूसरा नहीं कर सकता। इसीलिए तो वेद में कहा गया है ''शूद्राः पूता योजिता यज्ञिया इमाः'' अर्थात् स्त्रियां शुद्ध हैं, पवित्र हैं और यज्ञ समान आदरणीय हैं। वेद का यह मन्त्र नारी के महत्त्व को दर्शाता है। वैदिक काल में उनको अधिकार और धार्मिक क्षेत्र में उनको अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त थे।

ऋषियों की भांति अपाला, लोपमुद्रा, गार्गी आदि ऋषिकाओं ने परमात्मा के दिव्य ज्ञान का समाधि अवस्था में साक्षात्कार किया था। ''स्त्री हि ब्रह्म वभूविथ'' से प्रमाणित होता है कि स्त्रियां न केवल वैदिक कर्म काण्डों में ही भाग लेती थीं, बल्कि यज्ञ संचालन कार्य भी करती थीं। वे युद्धों में भी भाग लेती थीं।

युद्ध में सम्राट दशरथ के साथ उनकी भार्या महारानी कैकेयी रथ पर आरूढ़ थीं। असुरों का एक सनसनाता हुआ बाण आया। उसके प्रहार ने रथ के पहिये की धुरी को काट दिया। पहिया डगमगाया तो प्रत्युत्पन्ना कैकेयी को जब कुछ नहीं सूझा तो अपना हाथ उस धुरी के अन्दर दे दिया। पहिया स्थिर हुआ, दशरथ की बाण वर्षा से असुरों की सेना परास्त हुई। बाद में दशरथ ने अपनी हृदय साम्राज्ञी को रक्त रंजित अवस्था में देखा तो दंग रह गये। अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी कैकेयी ने महाराज दशरथ के साथ युद्ध में अपनी भूमिका निभाकर विजयश्री के मार्ग को प्रशस्त किया।

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अपने पुत्र को अपनी पीठ पर बांधकर दोनों हाथों में नंगी तलवार पकड़ ली, घोड़े की लगाम को दांतों में दबा लिया और अपनी महिला सैनिकों के साथ बारह–बारह सौ नरपिशाचों की गर्दनों को मर्दन का अपनी वीरता का, शौर्य का, तेजस्विता का, ओज का प्रारूप सारे संसार के सामने प्रकट किया।

आजादी के उस बहुत लम्बे संघर्ष में देश ने भगत सिंह को, राजगुरु को और सुखदेव को फांसी के फन्दे पर झूलते हुए देखा था। भगत सिंह जब फांसी के फंदे पर झूले तो उनकी माँ विद्यावती की आंखों से आंसू बहे। लोगों ने कहा – 'माँ! तू शहीद की माँ होकर रोती है, ये शोभा नहीं देता।' भगत सिंह की माता ने कहा – ''मैं अपने पुत्र की शहीदी पर नहीं रो रही हूँ। मैं तो अपनी कोख पर रो रही हूँ कदाचित् मेरी कोख ने एक और भगत सिंह को जन्म दिया होता तो मैं उसको भी देश के चरणों में समर्पित कर देती। अपनी सन्तानों में राष्ट्र भक्ति की भावना भरने वाली ऐसी थीं, भारत की माताएं। जिनकी घोषणा होती थी – ''मम पुत्रो शत्रु हन्ता मम दुहिता विराट'' अर्थात् मेरा पुत्र शत्रुहन्ता है और मेरी पुत्री विराट अर्थात् गौरवशाली है। वैदिक काल में नारी परिवार में साम्राज्ञी के रूप में अभिषिक्त होती थी। नारी गौरव की यह परम्परा उपनिषद् काल तक मिलती है। गार्गी, मैत्रेयी शास्त्रों की पूर्ण पण्डिता शास्त्रार्थज्ञ एवं ब्रह्मविद्या की मर्मज्ञ विदुषियाँ थीं।

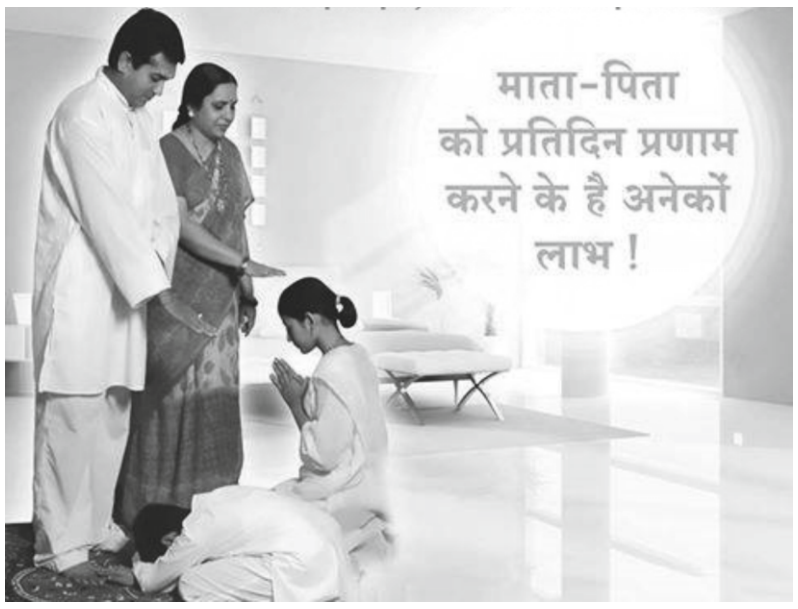

पुरुष के निर्माण की चर्चा के विषय में महर्षि दयानन्द कहते हैं – ''मातृवान, पितृवान्, आचार्यवान् पुरुषों वेदः'' अर्थात् पुरुष का निर्माण माता–पिता व आचार्य मिलकर करते हैं लेकिन माता का प्रथम स्थान है। इसीलिए ''माता निर्माता भवति'' माता को केवल जन्मदात्री माँ ही नहीं, अपितु निर्माण करने वाली माता कहा जाता है।

नारी के जीवन में चार चीजों की प्रमुखता है – संस्कार, समर्पण, वात्सल्य और स्वाभिमान, जिसे धारण करके वह चार रूपों में हमारे सामने आती है – पुत्री, पत्नी, माँ और स्त्री। पुत्री के रूप में संस्कार ग्रहण करती है, पत्नी के रूप में समर्पित होती है, माँ के रूप में ममत्त्व और वात्सल्य लुटाती है और स्त्री बनकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है और चारों रूप जब एक माँ में समाहित हो जाते हैं, केवल वह माँ रह जाती है जिसका जीवन भी शिशु है और धर्म भी शिशु ही है। पिता की भूमिका अपने–अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण है, लेकिन माता को प्राथमिकता प्रदान की जाती है।

माताओं ने देश को भगतसिंह जैसा बलिदानी पुत्र दिया, चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा पुत्र दिया। सरदार वल्लभभाई पटेल, भगवान राम, श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि को बनाने वाली माताएँ थीं। भारत की प्राचीन पद्धति में नारी का मुख्य कार्य सुसंस्कारित सन्तानों का निर्माण करना था क्योंकि माता ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है। बचपन से ही उसकी शिक्षा बच्चे को ज्ञान–अज्ञान, वास्तविकता और कृत्रिमता का बोध कराती है। उदाहरण के लिए माँ जीजाबाई ने अपने बेटे शिवा के मन में राष्ट्र प्रेम की कहानियों से वीरता की ऐसी लहर फूंक दी कि उसने राष्ट्र विरोधियों के छक्के छुड़ा दिये। माता मदालसा ने मनचाही सन्तान का निर्माण करके मातृत्व का लोहा मनवा दिया है। जीवन के प्रायः हर क्षेत्र में नारी ने पुरुष का सहयोग दिया है। वह एक ओर अपने पुत्रों, पति, भाइयों को रणक्षेत्र में बलिदान होने के लिए सहर्ष भेज देती है और स्वयं घर का मोर्चा संभालती है। वहीं दूसरी ओर सेना में लड़ने वाले जवानों के लिए सहायक बनती है। वह आवश्यकता पड़ने पर स्वयं रणक्षेत्र में चण्डी बनकर कूद पड़ती है। रानी सारन्धा ने पति के गौरव की रक्षा के लिए छाती में छुरा घोंपने का साहस दिखाया था। रानी पद्मिनी ने अपने वैभव की परवाह न करके कुन्दन से चमकते शरीर को धधकती चिता में जौहर कर अमरत्व पाया था।

परन्तु आज आजादी के नाम पर नारी के आचार, विचार, व्यवहार में जो अमर्यादित परिवर्तन हुआ है, वह बड़ी वेदना की बात है। विज्ञापनों के माध्यम से, फिल्मों के माध्यम से तथा विदेशों में सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर नारी प्रदर्शन की वस्तु बनाई जा रही है। आजादी के बाद नारी के भीतर एक भाव जगाया गया कि उसे मुक्त होना चाहिए। पति के बन्धन से मुक्त होना चाहिए, घर परिवार की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहिए, कर्त्तव्यों के बन्धन से मुक्त होना चाहिए। और पुरुष की बराबरी करनी चाहिए। लेकिन बराबरी वहाँ होती है जहाँ एक पक्ष ठोस हो। 'जिस देश ने स्त्री को केवल पुरुष की बराबरी नहीं, अपितु देवताओं से भी ऊँचा स्थान दिया है, जहाँ ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' का पावन भाव चित्त में संजोया गया हो वहाँ क्या स्त्री को पुरुष की प्रतियोगी बनना चाहिए।?

स्त्री अपनी करुणा, वात्सल्य, प्रेम व तेजस्विता में विराजे तथा पुरुष पुरुषोत्तम बनने का प्रयत्न करें तो निश्चित रूप से सृष्टि का सन्तुलन सुन्दर होगा।

नारी न किसी के पैर की जूती है न सिर की टोपी है। प्रतिद्वन्दी तो है ही नहीं। जिसके साथ प्रतिस्पर्धा करना सिखाया जा रहा है वह तो उनकी जननी है, वह स्वयं उनको जीने का मार्ग सिखाती है। भारत की नारी माँ होती है, ममता व वात्सल्य के शिखर पर विराजी होती है। वह अपने पति की भी पथ–प्रदर्शिका होती है।

इसलिए इस भौतिक चकाचौंध से बाहर निकलकर सीता, सावित्री, दमयन्ती जैसी देवियों के जीवन से प्रेरणा लेकर तथा कुसंस्कारों के जाल को हटाकर अपने अन्दर सादगी और वीरता के भाव संचालित करो और अपने पुराने गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए संघर्ष करो।

पुरुषों के साथ प्रतियोगिता करने में जो स्त्री सुख का अनुभव करती है मैं विरोध नहीं करती, परन्तु इतना जरूर है कि यह प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता सुखदायी नहीं, दुःखदायी ही बनेगी।

पुरुष की नकल करोगी तो फिर सदैव टूटी–टूटी सी रहोगी। बाजार में स्वच्छन्द घूमोगी तो ठोकरें खाओगी। मैं यह नहीं कहती कि तुम तरक्की मत करो। खूब उन्नति करो। पढ़ो–लिखो आगे बढ़ो। जहाज उड़ा रही हो। राकेट भी उड़ाने लगोगी। सब कुछ करोगी। करना भी चाहिए, परन्तु अपने नारीत्व और सतीत्व को खोकर नहीं। सतीत्व को खोकर तुम स्वयं लुट जाओगी, इसलिए जो कुछ भी करो अपने सतीत्व को, मातृत्व को संभाल कर करो।

– ऊँचागाँव, नसीरपुर,
हाथरस/मथुरा, (उ. प्र.)

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता द्वारा आयोजित श्रावणी उत्सव धूमधाम के साथ हुआ सम्पन्न

अपने जीवन में समर्पण, सेवा, परोपकार तथा त्याग की भावना को व्यवहार में परिवर्तित नहीं करेंगे तब तक यज्ञ का सही लाभ हमें प्राप्त नहीं होगा। इदं न मम् यज्ञ का प्राण है और स्वाहा यज्ञ की आत्मा है। प्राण और आत्मा का परस्पर जो सम्बन्ध हम अपने शरीर में देखते हैं उसी प्रकार यज्ञ करते समय हमें यह अनुभव करना चाहिए कि अपने जीवन में इदं न मम् की उच्च भावना जब तक हमारे अन्दर चरितार्थ नहीं होगी तब तक मनुष्य जीवन का लक्ष्य प्राप्त नहीं होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने बताया कि यज्ञ में यजमान का संकल्प ही अग्नि होता है और जैसे भौतिक अग्नि के बिना देवयज्ञ (अग्निहोत्र) नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार ब्रह्मयज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ एवं अन्य विविध यज्ञ भी बिना संकल्प की अग्नि के पूरे नहीं हो सकते। यदि संकल्प की अग्नि तीव्र है तो सभी यज्ञीय कार्य सफल हो जाते हैं और यदि संकल्प की अग्नि मन्द पड़ जाये तो कोई भी उत्तम कार्य सफल नहीं हो सकता। वर्तमान समय में हर आदमी की यही स्थिति बनी हुई है। संकल्प की अग्नि की कमी से वह कोई भी यज्ञीय कार्य नहीं करता।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने ओजस्वी व्याख्यान में स्वामी आर्यवेश जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने स्वामी बिरजानन्द की प्रेरणा से स्वामी दयानन्द और स्वामी दयानन्द की प्रेरणा से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय, श्यामजी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ आदि अनेक बलिदानियों ने भारत को आजाद कराने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करके हमें जो आजादी सौंपी थी आज 73 वर्ष के उपरान्त भी हम उन शहीदों के सपनों का भारत नहीं बना पाये हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभी भारतवासियों को शुभकामनाएँ दी तथा देश को नशामुक्त, जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, धार्मिक पाखण्ड मुक्त, महिला उत्पीड़न मुक्त तथा शोषण मुक्त भारत बनाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्ता ने जहाँ स्वामी आर्यवेश जी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना के साथ स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत किया वहीं उन्होंने श्रावणी उत्सव को सफल बनाने में जिन अधिकारियों तथा सदस्यों ने योगदान दिया उनका धन्यवाद भी ज्ञापित किया। इस उत्सव की व्यवस्था में मुख्य रूप से श्री दीनदयाल गुप्ता के अतिरिक्त उपप्रधान श्री रमेश आर्य, मंत्री श्री आनन्द देव आर्य, संयुक्त मंत्री श्री जोगेन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष श्री सज्जन बिन्दल आदि का विशेष सहयोग रहा। इनके अतिरिक्त प्रसिद्ध लेखक श्री खुशहालचन्द्र आर्य, पूर्व कार्यकारी प्रधान श्री चान्द रत्न दम्मानी, पूर्व मंत्री श्री नरेश गुप्ता व अन्य सदस्यों ने भी अपना सहयोग प्रदान किया। आर्य समाज कोलकाता के गणमान्य व्यक्ति श्रीराम आर्य, श्री दीपक आर्य, श्री मदन लाल सेठ, श्री ओम प्रकाश मसकरा आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित होते रहे। कार्यक्रम के अन्त में प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

ओ३म्

स्थापना 3 जून 1978

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम ...

यदि आप आर्य युवा शक्ति की कार्यप्रगति की एक झलक देखना चाहते हैं तो अवश्य पधारें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

ओ३म् बलमुपास्व

41 वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन

अध्यक्षता: डॉ. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

सानिध्य: स्वामी आर्यवेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन

रविवार, 1 सितम्बर 2019, प्रात: 9 से सायं 5 बजे तक

स्थान: योग निकेतन सभागार, 30-ए/78, पश्चिमी पंजाबी बाग, दिल्ली-26

यज्ञ: प्रात: 9.00 से 10.00 बजे तक - ब्रह्मा: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

विशेष आकर्षण

राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं धारा 370, समान अचार संहिता, गौ रक्षा, जनसंख्या नियन्त्रण कानून में आर्य समाज की भूमिका पर वैदिक विद्वानों के ओजस्वी विचार

देश के विभिन्न प्रान्तों से चुने हुए आर्य युवा प्रतिनिधियों का भव्य समागम

प्रात: राश: प्रात: 8 से 10 तक, ऋषि लंगर 1 से 2 तक, जलपान: सायं 5.00 से 5.30 तक

आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

केन्द्रीय कार्यालय: आर्य समाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-110007

E-mail: aryayouth@gmail.com, dkbhagat@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/ दूरभाष: 9868051444,9958889970, 7703922101

Formation of our personality

How can we form our personality is a question to be answered in affirmation leaving all what the negative approach is?

Personality of an individual has two phases I-Qutward and II-Inward. The congregation of the two can be defined in the form of personality.

The contituents of Personality :- The personality of an individual in based on some contituents out of which environment is the first one and the most important factor. Man is considered to be a product of his environment. Habits are formed accordingly. Genes are there in the physique to count up the potency of intelligance.

The second one is the reflection of the prior life of a person in other words prarabhdha is named for it. We Indians believe in birth and rebirth theory of coming into life. It is a well planned system of our life's functions at present to be awarded for the next.

- Babu Ram Sharma Vibhakar
52/2, Lal Quarter, Ghaziabad-201001
Mo.:-9350451497

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

कन्या गुरुकुल डोभी, जिला–हिसार, हरियाणा में यज्ञशाला का शिलान्यास

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु की धर्मपत्नी

डॉ. एकता सिन्धु के कर–कमलों से शिलान्यास सम्पन्न

गत् 8 अगस्त, 2019 को कन्या गुरुकुल डोभी, हिसार में हरियाणा के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु की धर्मपत्नी डॉ. एकता सिन्धु ने अपने पूज्य पिता स्व. चौ. हरि सिंह ढाका की स्मृति में यज्ञशाला का शिलान्यास किया। इस शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। उन्होंने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में डॉ. एकता शर्मा एवं उनके परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञशाला की नींव में डॉ. एकता शर्मा, स्वामी आर्यवेश जी तथा कन्या गुरुकुल डोभी के कुलपति श्री बलजीत सिंह आर्य ने अपने हाथों से ईंट रखी। इस अवसर पर स्वामी जी तथा डॉ. एकता शर्मा ने शिलान्यास पट्‌टिका का अनावरण कर यज्ञशाला का विधिवत शिलान्यास किया। इससे पूर्व गुरुकुल के

सभागार में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यजमान के रूप में डॉ. एकता शर्मा ने आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ आचार्य देवव्रत शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

कार्यक्रम में क्षेत्र के सैकड़ों गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की सफलता में मुख्यरूप से सर्वश्री इन्द्रजीत आर्य के अतिरिक्त श्री सत्यपाल अग्रवाल हिसार, श्री जगदीश सींवर सिरसा, श्री महावीर सिंह, सेवानिवृत्त तहसीलदार चौ. नन्दलाल, डी. एस.पी. श्री दलजीत सिंह आर्य, श्री राजमल ढाका प्रधानाचार्य गुरुकुल धीरणवास, श्री नत्थू सिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष गुरुकुल धीरणवास आदि का भी विशेष योगदान रहा। विदित हो कि यह कन्या गुरुकुल हिसार, सिरसा, फतेहाबाद आदि जिलों में एक मात्र कन्या गुरुकुल है जो उन्नति की ओर तेजी के साथ अग्रसर है। इस गुरुकुल के संचालन में श्री बलजीत सिंह आर्य एवं उनके समस्त सहयोगी अहर्निश जुड़े हुए हैं और उनका कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है।

सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान

– सुखदेव व्यास

सत्यार्थप्रकाश संसार की सर्वोत्तम पुस्तक है। इसमें सभी धर्म, विचार, इतिहास, सृष्टि उत्पत्ति, सत्यधर्म, अधर्म के साथ साथ अनेक विषयों का समीक्षात्मक वर्णन किया गया है। इसी कारण से यह ग्रन्थ संसार में लोकप्रिय हुआ। आज संसार की लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

सत्यार्थप्रकाश अनेक विषयों का भंडार है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान का भी उल्लेख किया है। यह सम्पूर्ण सृष्टि पंच महाभूतों के आधार पर सृजित हुई है। पंच महाभूत आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी हैं। यह पंचतत्व परमाणु रूप में सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान हैं। इन परमाणुओं के मिलन से ही अन्तरिक्ष के लोक लोकान्तर का सृजन हुआ है। जिस प्रकार पृथ्वी पर ईश्वर, जीव, प्रकृति के आधार पर प्राणी जगत् का निर्माण हुआ उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तरों में भी प्राणी जगत् का सृजन हुआ ही होगा।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में 'सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय' विषय पर अपना विमर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने वेदों के आधार पर सत्य जनता के सामने रखा कि यह सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है। जैसी पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्रमा और लोक–लोकान्तर और उसमें रहने वाले प्राणियों का निवास था वैसा ही वर्तमान कल्प में है और यह प्रवाह निरन्तर जारी रहता है। सत्यार्थप्रकाश में इस प्रश्न का समाधान उचित ही किया है। ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों बनाई अगर नहीं बनाता तो वह आराम से रहता, उसका उत्तर उन्होंने सत्य ही दिया है कि यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं, पुरुषार्थी की नहीं। प्रलय में जीवों को क्या दुःख है और क्या सुख? जो सृष्टि में सुख और दुःख की कल्पना की जाये तो सुख कई गुणा अधिक होता है। पवित्रात्मा जीव मुक्ति–साधन अपना कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है वैसे ही सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है।

यहाँ यह भी उल्लेख महर्षि ने किया है कि ब्रह्माण्ड में एक ही सूर्य रहता है जो सभी लोक लोकान्तर को प्रकाशित करता है। इससे यही सिद्ध होता है कि इस सृष्टि में अनेक सूर्य होंगे, वैज्ञानिकों ने यह भी खोज की है कि हमारे ब्रह्माण्ड के बाहर भी पृथ्वी जैसे ग्रह हैं। जहाँ पहुँचने में कई प्रकाश वर्ष लग जावेंगे। इस प्रकार अनेक सूर्य होकर सभी ग्रह उनके आसपास चक्कर लगा रहे हैं। इस विशाल अपरिमित आकाश में अनेक आकाश गंगाएँ हैं। उनमें सूर्य, चन्द्रमा, तारे, नक्षत्र होंगे। आज वैज्ञानिकों ने अनेक रहस्यों को उजागर कर दिया है। आकाश गंगाओं के ग्रहों पर पहुँचने के लिए मन की गति के विमान चाहिए। इस मानव देह से हम पहुँच नहीं सकते। हमारी देह उतनी स्थायी और सक्षम नहीं है। हो सकता है कि विचारशील मानव आसमान की सीमाओं को तोड़ कर वहाँ तक पहुँच जाये? वहाँ तक पहुँचने में अनेक पीढ़ियाँ व्यतीत हो जायेंगी।

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में यह प्रश्न उठाया है कि सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं? क्योंकिः–

एतेषु हीदँ् सर्वं वसुहितमेते हीदँ् सर्वं वासयन्ते।
तद्यदिदँ् सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।

– शत.14/6/7/4

पृथ्वी, द्यौ, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, चन्द्र, नक्षत्र, सूर्य इनका नाम वसु इसलिये है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। इसलिए वास के, निवास करने के घर हैं। इसलिए इनका नाम वसु है। जब पृथ्वी के समान सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र वसु हैं पश्चात् इनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या संदेह है? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा पड़ा है तो क्या यह सब लोक शून्य होंगे? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो कभी सफल हो सकता है? इसलिए सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है। महर्षि ने यह भी स्पष्ट किया है कि पृथ्वी के अलावा लोक लोकान्तरों में रहने वाले मनुष्यादि सृष्टि की आकृति में भेद संभव है। जैसे इस देश में चीनी, हब्शी और आर्यावर्त्त, यूरोप में अवयव और रूप रंग, आकृति का भी थोड़ा–थोड़ा भेद होता है। इसी प्रकार लोक लोकान्तर में भी भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है जिस जिस शरीर के प्रदेश में नेत्रादि अंग हैं उसी–उसी प्रदेश में लोक लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं क्योंकिः–

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

– ऋग्वेद 10/190/3

परमात्मा ने जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्रमा, द्यौ, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और तथस्थ सुख विशेष पदार्थ पूर्व कल्प में रचे थे वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं तथा सब लोक लोकान्तरों में भी बनाया है।

महर्षि का यहाँ तक दावा है कि जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर वेद हैं उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तरों में भी वेद का प्रकाश है जिस प्रकार एक राजा के राज्य में एक से कानून होते हैं उसी प्रकार राजराजेश्वर की पूरी सृष्टि में एक से ही नियम हैं। जिस प्रकार माता–पिता का सम्मान करना, दुष्टों, चोरों को दंडित करने के नियम हैं और सज्जनों की रक्षा करना, उनका सम्मान करना है, उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तर में भी इसी प्रकार के वेदोक्त नियम समान रूप से हैं। उसमें कोई भेद नहीं है।

महर्षि का दावा यह है कि जैसे जीव सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है, वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनन्द को भी भोगता है। यह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द घूमता अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टि विद्या को क्रम से देखता हुआ सब पदार्थों जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं देखता है जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनन्द अधिक होता है। भगवान कृष्ण ने भी गीता में जीवात्मा के लक्षण बताते हुए कहा हैः–

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

– गीता 2/23

अर्थात् इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते इसको आग जला नहीं सकती। इसको जल गला नहीं सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि यह जीवात्मा धधकते हुए सूर्य में भी प्रवेश कर सकता है। उसकी गर्मी उसे जला नहीं सकती। जिस ग्रह में जल ही जल हो वह इस जीवात्मा को गीला नहीं कर सकता और जिस ग्रह में हवा तेज चल रही हो वह इसे सुखा नहीं सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि ये जीवात्मा इस विशाल असीम अन्तरिक्ष में कहीं पर भी जा सकता है और उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस मानव देह में अगर मुक्ति या मोक्ष चाहता है तो उसे पूर्ण वैराग्य का जीवन जीते हुए कपटपूर्ण व्यवहार का त्याग करते हुए निर्मल और पूर्ण ज्ञानी होने पर वह ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर सकता है। महर्षि ने ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त करने की यह विधि बतायी है इस शरीर के माध्यम से हम केवल जहाँ तक हमारी नजर जाती है और वैज्ञानिक साधनों की सीमा तक ही इस सृष्टि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

महर्षि ने यह भी बताया कि लोकान्तरों की भाषा संस्कृत ही है। अगर आज के वैज्ञानिक संस्कृत भाषा में अन्य ग्रहों से सम्पर्क साधेंगे तो उनको संदेश प्राप्त हो सकते हैं। इसका प्रयोग करना चाहिए। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम व नवम समुल्लास में अन्तरिक्ष संबंधी कई जानकारियाँ दी हैं। यह कहा जाता है कि लंका का राजा रावण मंगल ग्रह तक जाता था। आज का वैज्ञानिक मंगल ग्रह और अन्य दूरस्थ ग्रहों तक की जानकारियाँ प्राप्त कर रहा है और वहाँ जाने के प्रयास में लगा है। चाँद पर मानव पहुँच चुका है। महर्षि ने जो विधि बतायी है क्या हम उस जीवनशैली में जी सकते हैं।

– 18 जहाज गली, उज्जैन, मध्यप्रदेश
चलभाष– 09039182489

मादक पदार्थों के सेवन की बढ़ती हुई प्रवृत्ति : कारण एवं परिणाम

– डॉ. अखिलेश निगम 'अखिल'

आज सम्पूर्ण विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के युवाओं में नशाखोरी की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने एक विकराल स्वरूप धारण कर लिया है। हमारे देश में नशाखोरी का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि लोग इसे फैशन समझ बैठे हैं। नशाखोरी से हमारे समाज का प्रत्येक वर्ग विशेष रूप से युवावर्ग अत्यधिक दिग्भ्रमित हो रहा है, इससे उसका शारीरिक एवं मानसिक पतन हो रहा है तथा वह आर्थिक, चारित्रिक एवं बौद्धिक रूप से भी अन्धकार के दलदल में निरन्तर फंसता चला जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण भी भारतीय संस्कृति को उपेक्षित कर रहा है, नवयुवक मादक पदार्थों का सेवन कर अपने आपको अत्याधुनिक सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, किन्तु इस कड़ी में वह यह भूल जाते हैं कि उनका जीवन अशांति, अन्धकार, निराशा, अपराध एवं असामाजिकता की ओर उन्मुख हो रहा है।

आज का युवावर्ग अपनी कुण्ठा, हताशा एवं शिक्षा में असफलता या एकाकीपन दूर करने के लिए भी मादक पदार्थों का धड़ल्ले से सेवन कर रहा है इसमें उनकी गलत संगति का भी बहुत बड़ा प्रभाव है। वास्तव में यह बहुत बड़ी विडम्बना है कि एक मित्र अपने मित्र को नशीले पदार्थों का सेवन करने की आदत डालकर सच्ची मित्रता का अहसास दिलाना चाहता है। प्रारम्भ में वह उत्सुकतावश या मित्रता के दबाव में किसी भी नशीले पदार्थ का सेवन करता है। धीरे–धीरे वह इसे मनोरंजन का साधन मानने की भूल कर बैठता है। जब नशीले पदार्थ का सेवन उसकी आदत में शुमार हो जाता है तो ऐसी स्थिति में यदि कोई सच्चा मित्र या उसका कोई शुभचिन्तक उसे सही मार्ग दिखाने का प्रयास करता है तो वह नशे की आदत को सही सिद्ध करने के लिए झूठे तर्क बना लेता है।

नशीली वस्तुओं के सेवन से सर्वाधिक प्रभावित 14 से 35 वर्ष के लोग हैं। समाज का किशोर वर्ग भी इसकी चपेट में है। हमारे जीवन की 12–18 वर्ष की अवस्था जिसे हम किशोरावस्था कहते हैं, जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, संवेदनशील एवं भावी जीवन की आधारशिला निर्मित करने की अवस्था होती है। ढेर सारे दिवास्वप्नों के साथ विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक परिवर्तनों का सामना करते हुए एक किशोर अनेकानेक समस्याओं एवं जिम्मेदारियों के साथ साक्षात्कार करता है। स्वभाव से जिज्ञासु प्रवृत्ति का होने के कारण वह समाज में व्याप्त अच्छाइयों एवं बुराइयों दोनों के प्रति स्वाभाविक रूप से आकर्षित होता है। विभिन्न प्रकार के माध्यमों यथा टी.वी., पोस्टर एवं विभिन्न प्रकार के आकर्षक विज्ञापन आदि के द्वारा सर्वाधिक आकर्षण मादक पदार्थों के प्रति होता है, जिसे शौकिया तौर पर प्रारम्भ करके किशोर उसके आदी होते चले जाते हैं। भारत में शराब का सेवन करने वाले किशोरों की संख्या लगभग 10 प्रतिशत और शौकिया तौर पर लुक–छिप कर शराब पीने वालों की संख्या 25–27 प्रतिशत तक है।

भारत के विभिन्न शहरों के विश्वविद्यालयों, डिग्री एवं माध्यमिक कालेजों के छात्र–छात्राओं में नशे की प्रवृत्ति बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है। एक नवीनतम सर्वेक्षण में यह बात भी उभर कर सामने आयी है कि सह–शिक्षा वाले कालेजों में लड़कियों द्वारा भी मादक पदार्थों का सेवन करना प्रारम्भ कर दिया गया है। इसमें सम्पन्न घरानों के लड़कों एवं लड़कियों द्वारा एल्कोहल पेय का धड़ल्ले से सेवन किया जा रहा है। इसका मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण एवं अपने आपको आधुनिक सिद्ध करने की होड़ की प्रवृत्ति मुख्य रूप से उभर कर सामने आयी है।

युवा वर्ग में मादक पदार्थों के सेवन के प्रमुख कारण &

युवा वर्ग में नशीले पदार्थों के सेवन के पीछे विभिन्न प्रकार के पारिवारिक, मानसिक, सामाजिक व अन्य कारण होते हैं, जो निम्नलिखित हैं :–

- परिवार में किसी बड़े सदस्य द्वारा खुलेआम नशीले पदार्थों का सेवन करना।
- साथियों और मित्रों के दुष्प्रभाव व कुसंगति के कारण।
- संरक्षकों और माता–पिता के द्वारा अपने बच्चों को कम स्नेह और सुरक्षा देना अथवा उपेक्षित व्यवहार मिलना।
- परिवार में सदस्यों के बीच प्रेम की भावना का अभाव होना।
- माता–पिता की अतिव्यस्तता और बच्चों की समस्याओं से अनभिज्ञ होने के कारण।
- कुण्ठा, निराशा और थकान दूर करने के लिए।
- पढ़ाई में मन न लगना, बेरोजगारी तथा भविष्य व कैरियर के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण होना।
- घर से या सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनपना।
- आस–पास के वातावरण में नशीली वस्तुओं की सहज उपलब्धि के कारण।
- जीवन में किसी भी प्रकार का खतरा व आनन्द लेने की इच्छा होना।

मादक पदार्थों का सेवन करने वालों के लक्षण व पहचान

- आँखों में लाली रहना, सूजन, सुस्ती और नींद की अधिकता।
- अकारण क्रोध, चिड़चिड़ापन व अत्यधिक तर्क–वितर्क करना।
- भूख कम लगना।
- उल्टियाँ होना, खाँसी का दौरा पड़ना व शरीर में दर्द तथा हाथों में कंपन होना।
- पढ़ाई, खेलकूद या अन्य कार्यों में मन न लगना।
- जबान लड़खड़ाना और अस्पष्ट उच्चारण।
- मुँह से शराब व अन्य पदार्थों की महक आना तथा शरीर से विशेष प्रकार की दुर्गन्ध आना।
- बात कहकर भूल जाना, गुमराह करना और झूठ बोलना।
- पारिवारिक सदस्यों व पारिवारिक कार्यक्रमों में अरुचि पैदा होना।
- स्कूल व कक्षा से प्रायः अनुपस्थित रहना व शिक्षकों की इज्जत न करना।
- बाहों, कपड़ों व शरीर में जगह–जगह पर इंजेक्शन के निशान।
- घर से पैसा अथवा सामान का गायब होना।
- घर में एल्यूमीनियम फाइल, मोमबत्ती, माचिस मिलना या नये पैकेट मिलना।
- प्रायः असामाजिक कार्यों में संलिप्त रहना व अधिक खर्च करना।

नशीले पदार्थों के सेवन के दुष्परिणाम

- शराब के अत्यधिक सेवन से लीवर में सूजन, अल्सर, पीलिया, रक्तचाप, हृदय रोग एवं हार्ट अटैक की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जाती है। मधुमेह के साथ–साथ पेट एवं आँत सम्बन्धी विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाते हैं।
- अत्यधिक धूम्रपान एवं तम्बाकू सेवन से दमा, ब्रोंकाइटिस, मुँह, गले या फेफड़े का कैंसर, हाई ब्लड प्रेशर, दिल का दौरा पड़ना, अल्सर, भूख न लगना, गुर्दा रोग, मधुमेह एवं दाँतों तथा मसूढ़ों की विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है।
- यौन सम्बन्धी विकार नपुंसकता एवं किशोर बालिकाओं में भविष्य में बाँझपन की सम्भावना बढ़ जाती है।
- गर्भस्थ शिशुओं में स्थाई अपंगता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- मानसिक दुर्बलता, याददाश्त में कमी, अनावश्यक उत्तेजना एवं स्वभाव में चिड़चिड़ापन जैसे विकार उत्पन्न हो जाते हैं।
- पारिवारिक कलह एवं अशांति का वातावरण उत्पन्न होना।
- नवयुवकों में नशे की लत के कारण चोरी एवं अपराध की दुष्प्रवृत्ति का विकास होना।
- नशे के कारण व्यक्ति में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी बढ़ जाती है। वाहन दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण नशा ही है।

अतः उक्त विवेचना से स्पष्ट है कि हमें सुदृढ़ एवं उन्नत राष्ट्र के निर्माण हेतु देश के युवावर्ग को नशारूपी दानव से मुक्त रखना पड़ेगा, जिसमें राजनेता, अधिकारी, समाजसेवी, बुद्धिजीवी पत्रकार एवं साहित्यकारों का भी यह परम दायित्व है कि हम सभी मिलकर समवेत रूप से नशाखोरी के विरुद्ध शंखनाद करें तथा नशीली वस्तुओं के विरुद्ध सामूहिक जनजागरण अभियान चलायें ताकि हमारा समाज नशीली वस्तुओं के चंगुल से पूर्णतया मुक्त हो सके।

– ओम निवास, 51 क्ले स्क्वायर, कबीर मार्ग, लखनऊ–226001 (उ. प्र.)

दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश) में होने वाले
दुर्लभ शारद यज्ञ का आमन्त्रण

26 सितम्बर 2019 से 28 सितम्बर 2019 तक आयोजित मठ के 39वें वार्षिकोत्सव के यज्ञ में तथा 29 सितम्बर 2019 की प्रातः 6.30 से 30 सितम्बर 2019 के प्रातः 10 बजे तक अहः अक्तुं दिन रात निरन्तर चलने वाले इस दुर्लभ शारद यज्ञ में आप सभी आमन्त्रित हैं। इस यज्ञ व सत्संग की गंगा में नहाने के लिए आप सब हृदय की गहराईयों से सादर आमन्त्रित हैं। अवश्य कर आएं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान व दयानन्द मठ चम्बा के संरक्षक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी के दिशा–निर्देश में तथा महान त्यागी तपस्वी सन्त पूज्य स्वामी जी के ही सन्यस्त शिष्य पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में यह सम्पूर्ण कार्यक्रम चलेगा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्र–छात्राओं की गतिविधियां आपको आकर्षित व प्रभावित करेंगी ही करेंगी। कार्यक्रम के बीच में अपनी विभिन्न प्रस्तुतियों के द्वारा अपनी कला व प्रतिभाओं का भी आप लोगों के सामने प्रदर्शन करेंगी। इसलिए इस यज्ञोत्सव के कार्यकम में आप लोग अवश्य भाग लें। स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मण्डल के सभी सदस्य, आदर्श विद्यालय के सभी अध्यापक व कर्मचारी वर्ग तथा मठ प्रबन्धक समिति के सभी सदस्य आप लोगों की प्रतिक्षा में रहेंगें।

आप ही लोगों के आग्रह पर, आप लोगों की सुविधा के लिए दयानन्द मठ चम्बा के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का खाता न. व आईएफएससी नम्बर भी दे रहे हैं।

खाता धारक का नामः– दयानन्द मठ चम्बा

खाता सं – 11149833806

IFSC Code- SBIN0000626

आप लोगों के दर्शनों का प्यासा, आप लोगों से मिलने के लिए व्याकुल, आप लोगों की राह में आंखें बिछाए, अपलक नेत्रों से आप लोगों की बाट जोहता आपका अपना ही।

– आचार्य महावीर सिंह

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

आर्य समाज के प्रथम नियम की व्याख्या

''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।''

व्याख्या :– विद्या वह है जिसके द्वारा हम ब्रह्मा द्वारा सृष्टि के पदार्थों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हैं। विद्या एक तकनीक है जिससे हम सृष्टि के पदार्थों के गुणों तक पहुँचते हैं। अन्तिम कारण तक पहुँचते हैं तभी तो कार्य की इतिश्री प्राप्ति पर हम मुग्ध होते हें। इसी को दृष्टिगत करते हुए तभी तो वैशेषिक दर्शन में दर्शनकार महर्षि कणाद ने कहा है – 'कारणाभावात् कार्य अभावः'। अर्थात् कारण के न होने से कार्य नहीं हो सकता। यदि मिट्टी नहीं है तो घड़ा नहीं बन सकता, यदि लौह धातु नहीं तो सिंडासी नहीं बनेगी, इष्टिका नहीं तो घर नहीं बनेगा। किसी भी कार्य का कारण अवश्य होता है। हम जगत में देख रहे हैं कि यह सृष्टि है तो इसका स्रष्टा भी अवश्य है। पदार्थों से शिल्पी जो ब्रह्मा का कार्य करता है। अनेकानेक जनोपयोगी कार्यरूप में अनेक वस्तुएं बनाता है तो वह काष्ठ से अनेक वस्तुएं बनायेगा और लौह तथा तांबे से अनेक इलेक्ट्रिक अथवा इलैक्ट्रॉनिक उत्पाद् सृजित करेगा। ये सब शिल्पिक ज्ञान के वर्धन का चातुर्य है। आविष्कार शिल्पी विद्वान् (ब्राह्मण) करता है जो मानवोचित संस्कृति और सभ्यता का विस्तार और संस्कार करता है। कृषि, उद्योग धंधों में क्रमागत उन्नति और परिष्कृति होती चली गई। तभी तो यजुर्वेद के त्रिंशोऽअध्याय में यह वेद मंत्र बताता है – ''मेधायै रथकारम् धैर्य्याय तक्षाणम्'' अर्थात् मेधा में प्रतिष्ठित रथकार शिल्पी, धैर्य में स्थित तक्षान् अर्थात् शिल्प के सूक्ष्म कार्य में दक्ष (कम्प्यूटर के हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में प्रवीण पंडित) ये दोनों विद्याएं और विद्याएं आवागमन और व्यापार को बढ़ावा देती है। इनका सभ्यता और संस्कृति में महान योगदान है तभी तो राजा (शासक) ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ अथर्ववेद का यह मंत्र उच्चारित करता है –

ये धीवानो रथकाराः कर्मारा ये मनीषिणः।
उपस्तीन पर्ण मह्यम त्वं सर्वान कृण्वभितो जनान्।।

अथर्व. तृतीय काण्ड, सूक्त '5' का छठा मंत्र

अर्थ :– जो तीक्ष्ण बुद्धि वाले धीमान रथों के निर्माता हैं और जो बड़े पंडित, कर्मों में कुशल गतिवन्त शिल्पी जन हैं। हे परमेश्वर! तू मेरे लिए उन सब जनों को मेरे चारों ओर से समीपवर्ती कर। (ताकि मैं और प्रजा सुरक्षित रह सकें)

शिल्प विद्या संस्कृति और सभ्यता की माँ है। शिल्प विद्या हाथ से ही पकड़ी जाती है। उसका उल्लेख अथर्ववेद के पंचम काण्ड में 17वें सूक्त के तीसरे मंत्र में निर्दिष्ट है।

'हस्तनैव ग्राह्य अधिरस्या ब्रह्म जायेति चेदवोचत्।
न दूताय प्रहेया तस्थ एषा तथा राष्टे गुपितं क्षत्रिस्य''।

अथर्व.

अर्थात् यह ब्रह्म विद्या (शिल्प विद्या) इसका आधार (आश्रय) हाथ से ही पकड़ना चाहिए। यह सताने वाले को देने योग्य नहीं अपितु इस विद्या से ही क्षत्रिय का राज्य सुरक्षित रहता है। ऋग्वेद के इस मंत्र को भी देखें – 'शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शंनो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु।।'' ऋ. 7–35–12

पदार्थ विद्या में शाश्वत् नियम कार्य साधते हैं जैसे गुणी में गुण होता है अतः विद्या सत्य होती है और अन्तिम कारण तक पहुँच कर हमें उत्तर मिलता है कि इन सबका आदि मूल परमेश्वर ही है। शाश्वत नियमों का नियन्ता अवश्यमेव परमेश्वर ही है।

विद्याएं अनेक हैं जैसे यांत्रिक विद्या, शिल्प विद्या, खगोल विद्या, भूगोल विद्या, भूगर्भ विद्या, तार विद्या, बेतार विद्या, कृषि विद्या, स्थापत्य विद्या, वास्तु विद्या, उड्उयन विद्या, धनुर्विद्या, शस्त्र–अस्त्र विद्या, सेतु सृजन विद्या, भेषज विद्या, आयुर्विद्या, प्राण विद्या, संगीत विद्या, शल्य क्रिया आदि ये सब विकास के आयाम रखती हैं। भौतिक समृद्धि का आधार इन विद्याओं का अभिवर्द्धन करना है।

महर्षि दयानन्द ने यज्ञ को ऐसे परिभाषित किया – 'यज्ञ उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान आग्निहोत्रादि जिनसे वायु वृष्टि जल और औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुँचाना, उसको उत्तम समझता हूँ। अन्त में यजुर्वेद के इस मंत्र पर भी विचार करना चाहिए।

मूर्द्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर
मृतऽआ जातमग्निम्। कविँ सम्राजमातिथिं
जनाना मा सन्ना पात्रं जनयन्तदेवाः।।

इस मंत्र का भावार्थ महर्षि दयानन्द कृत –

''जैसे सत पुरुष धनुर्वेद के जानने वाले परोपकारी विद्वान् लोग धनुर्वेद में कही गई क्रियाओं से यानों और शास्त्रास्त्र विद्या में अनेक प्रकार से अग्नि को प्रदीप्त कर शत्रुओं को जीता करते हैं वैसे ही अन्य सब मनुष्यों को भी अपना आचरण करना योग्य है।''

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द लिखते हैं – ''विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ और क्रिया–कौशल उत्पन्न होते हैं।''

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में विद्या–अविद्या को परिभाषित किया। ''जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या और जिससे तत्त्वस्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है''

यजुर्वेद में निहित राष्ट्रीय प्रार्थना भी हृदयंगम करना उचित है। परमात्मा (ब्रह्मा) की रचना में अद्भुत कृति है मनुष्य। वह अद्भुत पदार्थ है।

– व्याख्याकार – बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद–201001
मो.:–9350451497

पानी बचाने की जरूरत

क्षमा शर्मा

पूरे देश में पानी के लिए हाहाकार मचा है, तब लगातार यह भी कहा जा रहा है, कुछ ही सालों में देश में पानी की भारी कमी होने वाली है। चेन्नई में लगभग वाटर इमरजेंसी की हालत है। रांची में पानी के लिए चाकू चल रहे हैं। नदी–नाले सूख चुके हैं। ऐसे में बुंदेलखंड के जखनी गांव की चर्चा करना जरूरी है। बुंदेलखंड अरसे से पानी की भारी कमी से जूझ रहा है। मगर जखनी के कुंओं में इतना पानी है कि हाथ से बाल्टी डुबोकर पानी भरा जा सकता है। गांव के सभी बत्तीस कुओं में पानी ही पानी है। यहां के खेतों में लहलहाती फसलें खड़ी हैं। छह तालाब पानी से लबालब हैं। आखिर ऐसा कैसे हुआ। इसकी वजह है कि लोगों ने पानी इकट्ठा करने के लिए सरकार का मुंह नहीं जोहा। बल्कि पानी बचाने के लिए अपने पारंपरिक तरीकों का इस्तेमाल किया। इससे लागत भी कम आई और पानी भी खूब इकट्ठा हुआ। यहां के लोगों का कहना है कि यह सब आठ साल पहले शुरू हुआ। लोग पानी की कमी से परेशान थे। खेतों में कुछ नहीं होता था। पशु मर जाते थे। लोग रोजी–रोटी की तलाश में गांव छोड़ देते थे। गरीबी चरम पर थी। तब गांव के लोगों ने सर्वोदय आदर्श जल ग्राम अभियान समिति बनाई। गांव की सारी नालियों को और बारिश के पानी को तालाबों की तरफ मोड़ दिया गया। इससे तालाबों में पानी भरा। भूजल स्तर भी सुधरा। इस पानी को खेती और पशुओं के काम में लाया गया। इसके अलावा खेतों में पारंपरिक तरीके से मेड़ें बनाई गई। खेतों में पानी भर जाने से धान की फसल उगाना आसान हुआ। धान की फसल के लिए खेतों में सात–आठ महीने पानी रहता था तो आसपास का भूजल स्तर भी सुधरा। बारिश के पानी की एक बूंद भी बर्बाद न हो इसके लिए हर घर में व्यवस्था की गई और आज हालत यह है कि किसान न केवल खूब फसलें ले रहे हैं, बल्कि भारी मुनाफा कमा रहे हैं और खेतों में उगाई गई सब्जी, धान आदि को आसपास बेच रहे हैं। इस गांव की खुशहाली देखकर बाकी के गांव के लोग भी अब ऐसा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। जो लोग इस गांव से पानी की कमी के कारण नाता तोड़ चुके थे वे लगातार लौट रहे हैं। इसी तरह महाराष्ट्र के दत्ता पाटिल अमेरिका के कैलिफोर्निया में रहते हैं। पेशे से इंजीनियर हैं। वह हर साल अपने गांव हलगारा आते हैं। उन्होंने सालों तक अपने गांव में पानी की कमी को झेलते लोगों को देखा था। फसलें उजड़ गई थीं। खेत उजाड़ थे। ऐसा लगता था जैसे हरे–भरे खेतों की जगह दूर तक रेगिस्तान फैला हो। भूजल आठ सौ मीटर नीचे पहुंच गया था। तब उन्होंने अपने गांव की सूरत बदलने की सोची। क्योंकि कैलिफोर्निया जहां वह रहते हैं, वहां भी पानी की कमी है, लेकिन पानी को इतने तरीके से खर्च किया जाता है कि यह कमी महसूस नहीं होती। वहां का भूजल स्तर भी पानी की भारी कमी के बावजूद ज्यादा नीचे नहीं है। पाटिल ने पहले खुद दस लाख रुपये दिए, उन्होंने याहू कम्पनी से भी मदद

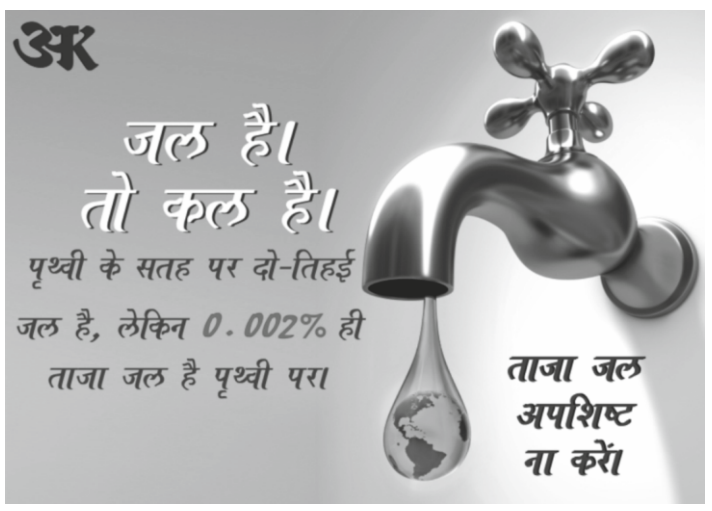

की गुहार लगाई। याहू ने सत्तर लाख रुपये भेजे। दत्ता जहां भी जाते लोगों से अपील करते कि उनके गांव की मदद करें। उनका कहना है कि कभी अगर वह फिल्म भी देखने गए तो फिल्म के बाद स्टेज पर चढ़कर लोगों से मदद करने की प्रार्थना करने लगे। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से भी मदद मांगी। इसके साथ–साथ वह गांव के लोगों को भी समझाते कि जीवन में खुशहाली लाने के लिए कैसे ज्यादा से ज्यादा पानी बचाएं। लोगों को समझाया कि जितनी भी बारिश होती है, उस पानी को इकट्ठा किया जाए। इसके लिए बांध बनाए गए। तालाब और कुओं को पुनर्जीवित किया गया। ज्यादा से ज्यादा वे पेड़ लगाए गए, जिनकी उम्र अधिक होती है। हजारों आम के पेड़ भी रोपे गए। इससे गांव में पानी की कमी तो कम हुई ही, चारों तरफ हरियाली भी बढ़ने लगी। सच तो यह ही है कि पेड़ और पानी एक–दूसरे के पूरक होते हैं। अब हलगारा पानी के मामले में माडल गांव कहा जाता है। अब वहां दो सौ करोड़ लीटर पानी जमा है। सूखे का कहीं नामोनिशां नहीं और किसान खेती से खूब मुनाफा भी कमा रहे हैं। उत्तराखंड में भी ऐसे प्रयास वर्षो से चल रहे हैं। वहां के दूधा टोली गांव में भी पानी बचाने के पारंपरिक तरीके अपनाकर बिना किसी सरकारी सहायता के पानी की कमी को पूरा किया है।अन्ना हजारे ने वर्षो पहले अपने गांव रालेगांव सिध्दि में पानी को बचाने और शुध्द पानी घर–घर पहुंचाने का प्रयास किया था। इससे गांव के जो लोग बाहर चले गए थे, वे भी वापस लौट आए। दूषित पानी के कारण बड़ी संख्या में बच्चों की मृत्यु होती थी, वे भी खत्म हुई। दुनिया भर में सालों से चेतावनी दी जा रही है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। अपने देश में भी यह दिखाई दे रहा है। नदियां प्रदूषित हैं। गंगा यमुना जैसी नदियों का पानी पीने लायक तो क्या जानवरों के नहलाने लायक भी नहीं बचा है। इन नदियों में आक्सीजन का लेवल ई तक जा पहुंचा है। पूरे देश में अपनी नदियों को उद्योगों के कचरे ने बर्बाद कर दिया है। बाकी की कमी हमने प्लास्टिक और अन्य प्रदूषित सामान पानी में फेंककर पूरी कर दी है। समय पर चेतने की जरूरत है। बारिश आ रही है। हम सब अपने अपने तरीके से पानी बचाने की कोशिश कर सकते हैं। बहुमंजिली इमारतों में बेतहाशा पानी खर्च होता है। इन इमारतों में वर्ष जल संचयन के लिए अभियान चलाए जा सकते हैं। अब जब भी ऐसे बहुमंजिले नए प्रोजेक्टस शुरू किए जाएं बिल्डर के लिए अनिवार्य कर दिया जाए कि इस्तेमाल करने के बाद पानी साफ करने और वर्ष जल संचयन की व्यवस्था ऐसी इमारतों में जरूर हो। अस्पतालों, होटलों, माल्स, रेलवे स्टेशंस, बड़ी कम्पनियों के दफ्तरों आदि में उपयोग हुए पानी को साफ कर, उसे फिर से इस्तेमाल करने लायक बनाया जा सकता है। बगीचों और पार्कों को सींचने के लिए भी यह पानी काम आ सकता है। इससे भूजल स्तर भी बढ सकता है। सोचने से अब काम चलने वाला नहीं कि जब होगा, तब देखा जाएगा। यह किसी व्यक्ति का नहीं सरकारों का काम है। एक बार नष्ट हुआ पानी हमें दोबारा कभी नहीं मिलेगा। जल के बिना जीवन नहीं है, यह बात मुहावरों या कहावतों में नहीं हमें अपने जीवन में उतारनी होगी।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान

तप, त्याग और संघर्ष की प्रतिमूर्ति

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी

स्वामी अग्निवेश जी का

80वाँ

जन्म दिवस

21 सितम्बर, 2019 को देश की राजधानी दिल्ली में

विशाल स्तर पर मनाया जायेगा

इस अवसर पर कई महत्त्वाकांक्षी कार्यक्रम आयोजित होंगे। समस्त आर्यजनों एवं स्वामी अग्निवेश जी के साथ संघर्षरत सभी साथियों से निवेदन है कि दल–बल के साथ कार्यक्रम में सम्मिलित होकर स्वामी जी को यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की शुभकामनाएँ प्रदान करें।

स्वामी आर्यवेश
सभा प्रधान

पं. माया प्रकाश त्यागी
कोषाध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।